

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार पर निर्मित

पाठ्यक्रम

आचार्य जैनदर्शनम् तृतीय सत्रार्द्ध

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

[संसद के अधिनियम द्वारा स्थापित]

जनकपुरी नई दिल्ली

जैनदर्शनम्

पत्र संख्या - DSCC - 24

पाठ्यक्रम विवरणम् -

द्वादशानुप्रेक्षा

भाग - 1	क्रेडिट - 1	यूनिट - 1	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

अनुप्रेक्षायाः स्वरूपं भेदाः प्रयोजनञ्च, धर्मपुरुषार्थस्य कृते तदवदानम्।

भाग - 2	क्रेडिट - 1	यूनिट - 2	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

अनित्यानुप्रेक्षा, अशरणानुप्रेक्षा, संसारानुप्रेक्षा, एकत्वानुप्रेक्षा, अन्यत्वानुप्रेक्षा, अशुचित्वानुप्रेक्षा।

भाग - 3	क्रेडिट - 1	यूनिट - 3	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

लोकानुप्रेक्षा, बोधिदुर्लभानुप्रेक्षा, धर्मानुप्रेक्षा, आस्रवानुप्रेक्षा, संवरानुप्रेक्षा, निर्जरानुप्रेक्षा

भाग - 4	क्रेडिट - 1	यूनिट - 4	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

अनुप्रेक्षाचिंतनस्य सामाजिकोपयोगिता, जैनपरम्परायाः संस्कृतप्राकृतयोरनुप्रेक्षासाहित्यस्य सर्वेक्षणम्, भारतीयसमाजे अनुप्रेक्षाचिंतनस्य प्रभावाकलनम् परीक्षणविधयश्च।

पाठ्य/सन्दर्भग्रन्थाः - बारसाणुवेक्खा (आचार्यकुन्दकुन्दः) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

सहायकग्रन्थाः

1. कार्तिकेयानुप्रेक्षा (आचार्यकार्तिकेयस्वामी, सम्पा. ए. एन. उपाध्ये)
परमश्रुत प्रभावक मण्डल, अगास
2. कार्तिकेयानुप्रेक्षा (संपा./अनु. डॉ. योगेश कुमार जैन) हंसा प्रकाशन, जयपुर

जैनदर्शनम्

पत्र संख्या - DSCC - 25

पाठ्यक्रम विवरणम् -

अनेकान्तः स्याद्वादश्च

भाग - 1	क्रेडिट - 1	यूनिट - 1	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

अनेकान्तस्यावधारणा, अनेकान्तस्य वस्तुनः सामान्यविशेषधर्मनिरूपणं,
द्रव्यगुणपर्यायानामेकत्वेपि कथमनेकान्तता? अनेकान्तत्वसिद्धौ युक्तिः। न छलमात्रमनेकान्तः।

भाग - 2	क्रेडिट - 1	यूनिट - 2	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

स्याद्वादः, स्यात् पदस्य रूढार्थः, स्यात् पदस्य निपातार्थः, नियमनिषेधनशीलं स्यात्पदं, स्याद्वादो
भाषायाः सिद्धान्तः कथं, स्याद्वादस्यापरिहार्यता, स्याद्वादस्य लौकिकं शास्त्रीयं प्रयोजनम्,
सप्तभङ्गन्यायसम्मतः स्याद्वादः।

भाग - 3	क्रेडिट - 1	यूनिट - 3	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

सप्तभङ्गीसिद्धान्तस्य प्रयोजनम्, सप्तभङ्गीलक्षणनिर्देशः, सप्तभङ्गनिदर्शनम्, सप्तभङ्गानां प्रयोगे
हेतुः, सप्तभङ्गप्रयोगैः संशयादिनिवृत्तिः, प्रमाणसप्तभङ्गी तत्प्रयोजनञ्च, नयसप्तभङ्गी
तत्प्रयोजनञ्च, उभयोरपरिहार्यता ।

भाग - 4	क्रेडिट - 1	यूनिट - 4	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

भारतीयदर्शनसम्प्रदायेषु अनेकान्तस्य समीक्षा, स्याद्वादविषये विभिन्नदार्शनिकानामभिमतानि,
लोके जीवने स्याद्वादस्य मूल्यं, सामाजिकैकतायै स्याद्वादस्य योगदानम्।

आचार्य-तृतीय-सत्रार्द्ध [जैनदर्शनम्]

पाठ्य/सन्दर्भग्रन्थाः - अष्टसहस्री 96-114 कारिकापर्यन्तम् (आचार्यसमन्तभद्रः)

जैनविद्या संस्थान, श्री महावीर जी

सहायकग्रन्थाः –

1. आप्तमीमांसा तत्त्वदीपिका (डॉ. उदयचन्द्रजैन)) श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला, काशी
2. समणसुत्तं समख्यातिटीकोपेतम् (प्रो. एस.के. सिंघई)
प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संस्थान, लाडनूँ
3. स्याद्वाद-एक अनुशीलन (संपा. पं. चैनसुखदास न्यायतीर्थ) जैन विद्या संस्थान, श्री महावीर जी
4. सन्मतितर्क प्रकरण (आ. सिद्धसेन) दिव्यदर्शन ट्रस्ट, धोलका, गुजरात
5. सप्तभंगी तरंगिणी (विमलदास) भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
6. नय की अवधारणा (प्रो. धर्मचन्द्रजैन, कुरुक्षेत्र) मालेर कोटरा, पंजाब

जैनदर्शनम्

पत्र संख्या - DSCC - 26

पाठ्यक्रम विवरणम् -

ज्ञेयतत्त्वमीमांसा

भाग - 1	क्रेडिट - 1	यूनिट - 1	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

ज्ञानविषयो ज्ञेयपदार्थः, पदार्थविशेषप्रज्ञापनं, गुणविशेषाः ततश्च द्रव्यविशेषाः, मूर्तामूर्तपदार्थाः, चिदचित्पदार्थाः, जीवपुद्गलधर्माधर्माकाशकालद्रव्याणां निर्देशः। दार्शनिकपृष्ठभूमौ जैनदर्शनस्य वस्तुतत्त्वनिरूपणस्य उपादेयता यथार्थता च।

भाग - 2	क्रेडिट - 1	यूनिट - 2	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

जैनदर्शने पदार्थमीमांसा, द्रव्यलक्षणं, स्वरूपास्तित्वं, सादृश्यास्तित्वञ्च, प्रत्येकमपि स्वभावसिद्धः, उत्पादव्ययध्रौव्यात्मकत्वे सत् परस्परमविनाभावः, सत्ताद्रव्ययोरनर्थान्तरत्वं, भेदत्वे पृथक्त्वमन्यत्वञ्च, सत्ताद्रव्ययोः गुणगुणीभावः, गुणगुणिनोः नानात्वाभावः, सदसतोरुत्पादनिश्चयः, सदसद्धर्मयोः सिद्धिः।

भाग - 3	क्रेडिट - 1	यूनिट - 3	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

जीवस्य संसारदशा, तत्र हेतुः, मनुष्यादिपर्यायेषु जीवस्य क्रियाफलत्वं, जीवस्यावस्थितानवस्थितत्वं, जीवस्य कर्मबन्धने हेतुः, जीवेषु ज्ञानचेतना, कर्मचेतना, कर्मफलचेतना।

भाग - 4	क्रेडिट - 1	यूनिट - 4	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

दार्शनिकपरिधौ पदार्थमीमांसा, सांख्ययोगयोः पदार्थसमीक्षा, न्यायवैशेषिकयोः पदार्थसमीक्षा, मीमांसावेदान्तयोः पदार्थसमीक्षा, प्रवचनसारस्य संस्कृतटीकाणां परिज्ञानम्।

पाठ्य/सन्दर्भग्रन्थाः - प्रवचनसारः (आचार्यकुन्दकुन्दः) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

सहायक ग्रन्थाः - 1. प्रवचनसार सरोजभास्कर (आ.प्रभाचन्द्र, सम्पा. मुनि प्रणम्यसागर)

आर्हत विद्या प्रकाशन, गोटेगाँव

2. जैन शासन (पं.सुमेरचंद दिवाकर) भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

3. जैनदर्शन (पं. महेन्द्रकुमार जैन न्यायाचार्य) श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला, काशी

4. जैनतत्त्वविद्या (मुनि प्रमाणसागर) भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

जैनदर्शनम्

पत्र संख्या - DSCC - 27

पाठ्यक्रम विवरणम् -

नयप्ररूपणा

भाग - 1	क्रेडिट - 1	यूनिट - 1	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

वस्तुस्वरूपाधिगमे प्रमाणनयाः, नयस्य स्वरूपं प्रयोजनञ्च, एकांतानेकांतयोः मर्यादा, सम्यक्नयाः, मिथ्यानयाः, शब्दनयाः, ज्ञाननयाः, तदुभयोः समन्वयः, नयदृष्टिहीना मनुष्या कथमन्धा इति।

भाग - 2	क्रेडिट - 1	यूनिट - 2	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

नयस्य मूलभेदाः, द्रव्यार्थिकनयः, तद्भेदाः, कर्मोपाधिनिरपेक्षशुद्धद्रव्यार्थिकनयः, कर्मोपाधिसापेक्षा शुद्धद्रव्यार्थिकनयः, सत्ताग्राहकशुद्धद्रव्यार्थिकनयः, भेदकल्पनानिरपेक्षद्रव्यार्थिकनयः, अन्वयद्रव्यार्थिकनयः, स्वपरद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिकनयाः, परमभावग्राहीद्रव्यार्थिकनयः, अनादिनित्यद्रव्यार्थिकनयश्च।

भाग - 3	क्रेडिट - 1	यूनिट - 3	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

पर्यायार्थिकनयः तद्भेदाश्च, अनादिनित्यपर्यायार्थिकनयः, सादिनित्यपर्यायार्थिकनयः, अनित्यशुद्धपर्यायार्थिकनयः, अनित्याशुद्धपर्यायार्थिकनयः, कर्मोपाधिनिरपेक्षानित्यशुद्धपर्यायार्थिकनयः, कर्मोपाधिसापेक्षानित्याशुद्धपर्यायार्थिकनयश्च ।

भाग - 4	क्रेडिट - 1	यूनिट - 4	होरा - 16-20
---------	-------------	-----------	--------------

नैगमादिसप्तनयाः, तन्निरूपणस्य प्रयोजनं, नैगमस्य लक्षणं भेदाश्च, संग्रहनयस्य लक्षणं तत्प्रयोजनं, सत्ताऽवांतरसत्तामहासत्ता च संग्रहनयस्य विषयः, व्यवहारनयः तद्भेदाः, ऋजुसूत्रनयः तद्भेदाः, शब्दनयः तद्भेदाः, समभिरूढनयस्य लक्षणं, प्रयोजनञ्च एवंभूतनयस्य लक्षणं प्रयोजनञ्च।

आचार्य-तृतीय-सत्रार्द्ध [जैनदर्शनम्]

पाठ्य/सन्दर्भग्रन्थाः - द्रव्यस्वभावप्रकाशकनयचक्रम् (आचार्यमाइल्लधवलः)

श्री माणिकचन्द्र दिग.जैन ग्रन्थमाला, मुम्बई

सहायकग्रन्थाः -

1. नय की अवधारणा (डॉ. धर्मचन्द्रजैन) मालेर कोटरा, पंजाब
2. जैनदर्शन में अनेकांतवाद- एक परिशीलन (प्रो. अशोक कुमार जैन)
श्री दिग. जैन संघी मन्दिर सांगानेर
3. जैनदर्शन में नयवाद (डॉ. सुखनन्दन जैन) भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
4. दार्शनिक समन्वय की दृष्टि - नयवाद (प्रो. अनेकांत कुमार जैन) अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली
5. जैन न्याय को आचार्य प्रभाचन्द्र का योगदान (डॉ. योगेशकुमारजैन) जैनविश्व भारती, लाडनूँ
6. परमभावप्रकाशक नयचक्र (डॉ. हुकमचंद भारिल्ल) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर